भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-11, अंक : 1-2	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
मंगलवार, 3 मार्च' 88	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

3 फरवरी.....और.....दिल्ली मंदिर निर्माण कार्यारंभ

हम सभी जानते है कि गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज का संकल्प था कि भारत की राजधानी दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर का निर्माण हो.....प.पू. काकाजी ने अपने गुरु का यह वचन नीचे नहीं गिरने दिया.....अध्धर झेल लिया। इसी संकल्प को साकार करने जब दिल्ली में कोई समाज नहीं था व किसी का सहकार भी नहीं था तब भी कई सालों से प.पू. काकाजी दिन या रात, सर्दी-गर्मी देखे बिना बार-बार दिल्ली आते और 1968 से तो संतमंडल को भी वहां से भेजते थे। आज 20 साल के बाद उनका अनथक् परिश्रम सफल हुआ। प.पू. काकाजी की चाहना भव्य विशाल मंदिर का निर्माण करने की ही नहीं थी, बल्कि एक अनोखा आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र व चैतन्य मंदिर बनाना ही उनका उद्देश्य था। उस दिव्य विभूति के इस श्रम को, निरपेक्ष प्रेम को उनके अल्प संबंध में आया हुआ व्यक्ति कभी भी नहीं भूल पायेगा।

गुणातीत स्वरूपों व दिल्ली संतमंडल ने प.पू. काकाजी के द्वारा छोड़े गये, इस अधूरे कार्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प लेकर मंदिर निर्माण कार्यारंभ के लिए 3 फरवरी–प.पू. काकाजी के साक्षात्कार का महामंगलकारी दिन निश्चित किया। गुजरात से प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प्र.ब्र.स्व.प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प्र.ब्र.स्व.प.पू.साहेब, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिभाई साहेब, सभी स्वरूपों की चैतन्यजनजी सरीखी ब्रह्मस्वरूपीणी पू. बा., पू. ज्योतिबहन आदि बहनें सोखड़ा से संतमंडल, बंबई से प.पू. काकाजी के लाडले युवकों इस मंगल अवसर पर कृपा आशीष बरसाने दिल्ली पधारे। इस अवसर पर गुणातीतस्वरूपों के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ सभी को अधिक से अधिक मिल सके...हमें मौज में बक्षीश रूप मिली इस भव्य प्राप्ति को हम समझ पायें व सत्संग में आत्मबुद्धि व प्रीति से जीने की नई सूझ मिल सके इसी हेतु 1 व 2 फरवरी को सत्संग शिविर का आयोजन किया था। दिल्ली के हरिभक्तों की तो आनन्द की सीमा

नहीं थी। सभी के मुख पर अपने प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी महाराज के लिए कुछ कर दिखाने की उत्साह, उमंग दिखाई पड़ती थी।

संतमंडल व युवकमंडल ने दिन रात अनथक् परिश्रम करके सुन्दर मंडप बांधा था ! गुणातीत स्वरूपों के बिराजने भक्तिभाव से स्टेज तैयार की गई थी। स्टेज के एकदम मध्य प.पू. काकाजी की मूर्ति रखी थी। मंडप में प्रवेश करते ही प.पू. काकाजी की मूर्ति देखकर एक मिनट के लिए सभी के दिल की धड़कन रुक जाती। प.पू. काकाजी की मूर्ति एकदम प्रगट व सजीव दिखाई पड़ती थी। वास्तव में तो दिव्य स्वरूप में वह हर पल प्रगट ही हैं.....हमारे आसपास ही हैं हरेक को हुई यह अनुभूति इसका अद्‌भुत प्रमाण थी।

1 फरवरी सोमवार को सुबह साढ़े आठ बजे प्रत्यक्ष गुणातीतस्वरूपों की हाजिरी में प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सत्संग शिविर का उद्‌घाटन करने दीप प्रज्जवलित किया। 1 और 2 फरवरी की सुबह-शाम दो-दो घंटे सत्संग शिविर की सभा चली। दिल्ली हरिभक्तों ने अपने दिल की प्रार्थना गुणातीतस्वरूपों के चरणों में रखी। सभी की एक ही प्रार्थना थी कि प.पू. काकाजी का ऋण अदा करने व गुणातीतस्वरूपों को राजी करने दृढ़ संकल्प होवें....सत्संग शिविर में सुबह-शाम निजी हरिभक्तों ने उपस्थित होकर इस स्वर्ण मौके को लूट लिया। सभी गुणातीतस्वरूपों ने भी खुले दिल से आशीष वर्षा बरसाई और संत के संबंध से जीवन में सच्चा, सुख, शांति, आनन्द प्रगटाने का सरल साधन बताकर सबको निश्चिन्त कर दिए।

3 फरवरी की सुबह मंदिर निर्माण कार्य विधि की शुरुआत करने महापूजा का आयोजन किया था। प.पू. पप्पाजी, प.पू. साहेब, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. बा, प.पू. ज्योतिबहन के सान्निध्य में 31 गृहस्थ जोड़ो को बिठाकर महापूजा विधि की गई। सभी के मुख पर यह कार्य शुरु होने का हर्ष था परन्तु दिल में एक दर्द भी था-काश ! प.पू. काकाजी स्थूल स्वरुप में इस अवसर पर होते तो...!!! लेकिन दिव्य स्वरुप में हर पल उनकी उपस्थिति हरेक को धीरज दे रही थी। महापूजा विधि के पश्चात् नींव की ईंट रखने का क्रार्यक्रम आरंभ हुआ। सर्वप्रथम प.पू. काकाजी महाराज व कांतिकाका के अस्थिकुंभ समेत प्रगट व परोक्ष के 27 तीर्थों की पवित्र मिट्‌टी के कलश रखे गये। प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. हरिभाई साहबे, संतमंडल व प.भ. मल्कानी साहेब और अन्त में पू. बा, पू. ज्योतिबहन वगैरे बहनों ने पवित्र शुभ हस्तों द्वारा पूजन करके नींव की ईंटें रखीं। सारा वातावरण तालियों से गूंज उठा। दिल्ली संतमंडल व हरिभक्तों द्वारा इस विधि की पूर्णाहुति हुई। इसके बाद प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन मनाने की सभा शुरु हुई। सभी ने गुणातीतस्वरूपों के पास अन्तर की याचना की। प.पू. काकाजी द्वारा किए गए अत्यधिक श्रम व अनुभवों को याद करके सभी भावविह्वल हो गए। प्रार्थना के बाद गुणातीतस्वरूपों ने आशीर्वाद बरसा कर सबको आनन्द विभोर कर दिए। इस उत्सव में पंजाब, यू.पी., एम.पी., हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र व विदेश के भक्तों ने सम्मिलित होकर स्वयं को धन्य कर लिया। प्रसाद लेकर सभी ने विदाई ली। इस प्रकार खूब धूमधाम व हर्षोल्लास से दिल्ली मंदिर की मुहूर्तविधि गुणातीत स्वरूपों की सेरे छाया में पूर्ण हुई। सोखड़ा से आये संतमंडल व तन, मन, धन से सेवा करने वाले सभी हभिक्तों को हार्दिक धन्यवाद !!!

अंत में, दुबारा पू. बा की 85 वर्ष की आयु

देखते हुए उन्हें दिल्ली आने के लिए खूब मना करने पर भी सिर्फ एक पू. काकाजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करने व गुरुजी के प्रति एक ममता के खिंचाव के कारण पू.बा. इस मंगल अवसर पर दिल्ली आशीर्वाद देने पधारे उसके लिए उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम.....★

—और श्रीजी महाराज ने कहा—

जब किसी हरिभक्त का दोष नजर आये तब यूं समझना कि—'यद्यपि इसका स्वभाव तो सत्संग के योग्य नहीं है, तब भी उसे जो यह सत्संग मिला है और भले ही जैसा तैसा है, परन्तु इस सत्संग में पड़ा रहा है; सो जरूर पूर्वजन्म के या इस जन्म के उसके संस्कार भारी है; तब ही उसे ऐसा सत्संग मिला है' —ऐसा समझकर उसका भी अतिशय गुण ग्रहण करना चाहिये।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-24
गुरुवार, 22 दिसम्बर 1819

★ ★ ★

ब्रह्मप्रवाह

शुभाशीष

प.भ. संतमंडल तथा दिल्ली का भाविक सत्संगीमंडल व दिव्यमुक्तों तथा महिला मंडल समस्त—

अहोहो—दिल्ली के भक्तों ने हमारी (पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी, पू. काकाजी, पू. कांतिकाका, पू. अक्षरविहारी व पू. साहेब वगैरा की) खूब ही शोभा बढ़ाई व उसके परिणामस्वरूप अब सुन्दर-सर्वोत्तम मंदिर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और पू. योगीजी के संकल्प से ही देखते-देखते हो ही जाएगा; तो सब इस मंगल अवसर पर बहनों-भाईयों मिलजुल कर उत्साह से **मंदिर, ठाकुरजी** व **गुरुजी** की अनन्यभाव सेवा कर लेना। उसमें हमारी **अन्तर की खूब प्रसन्नता मिलेगी** व प्रभु तुम्हारे सब काम हलके करके सफल करेंगे व शांति आनंद बक्षिश दे देंगे....

अब सब गुरुजी—सदगुरुजी व परमगुरुजी को आगे रखकर सेवा, भक्ति व सत्संग करते रहना। जिससे तुम्हारे संकल्प व प्रार्थना से **पलक झपकते** ही मंदिर प्रभुजी कर देंगे और सबको सेवा का लाभ मिलेगा और उससे **दुगुना तो प्रभु** जरुर जरूर जरूर दे ही देंगे इतना भरोसा रखना। तुम सबको खूब-खूब धन्यवाद-धन्यवाद।

गुरुजी के खास जन्मदिन—प्राकट्यदिन की भी छुपी सेवा करना। उससे स्व-रहित—स्व-भावरहित होने का अचूक अमाप बल मिलेगा।

पंजाब के सबभक्तों प.पू. उत्तमस्वामिजी की सेवा करना, उससे लुधियाना में भी देखते ही देखते मंदिर व केन्द्र गुरुकृपा से हो ही जाएगा। तो सब बल में रहना। **किसी का भी तनिक भी देखना ही नहीं।** वच. प्र. 16 के मुताबिक अंतर्दृष्टि व प्रार्थना ही...। देखना, कैसा चमत्कार का सर्जन होता है। जय जयकार हो जायेगा।

....**दिल्ली** और **लुधियाना** प्रभुकृपा से खूब बढ़ जायेगा। तो राजी रहना। **सुहृदभाव** ही बढ़ाते रहना, तो महाशक्ति प्रकटेगी और सबके काम सरल बनेंगे। तो इस शुभ दिन पर अन्तर के आशीर्वाद।

11 मार्च, 1983

प.पू. काकाजी महाराज

स्वामी की बातें

96. कल्याण की गरज कैसी रखनी चाहिए?
तो–जैसे उन्नहत्तर के अकाल में भीमनाथ में भीख मांगने आते थे व गिड़गिड़ाते थे और धक्के मारने पर भी वहां से जाते नहीं थे, ठीक ऐसी ही गरज रखनी चाहिए।

प्र-2,95

97. ब्रह्माण्ड के सारे जीवों को खिलाने की अपेक्षा एक भगवदी को खिलाना–वह अधिक है।

प्र-2, 117

98. बड़े संत के साथ जी जोड़ा हो और यदि बाह्य परिस्थितियां विपरीत हो जायें या उसका सत्संग तक छूट जाने की परिस्थिति आ जाये, तो संत उसका प्रायश्चित अपने सिर पर ले लेते हैं या उसको प्रायश्चित करने का बल देते हैं या आखिरकार उसे कोई रोग प्रेर कर भी सत्संग में रखते हैं, किन्तु उसे जाने नहीं देते। प्र-2,121

99. तीन बातें सबसे अधिक रखनी। बाकी अन्य गुण–त्याग वैराग्यादि तो किसी में कम होते हैं, किसी में ज्यादा।
वह तीन बातें इस प्रकार है–
एक तो–उपासना,
दूसरी–आज्ञा
और तीसरा–भगवदी के साथ सहृदभाव।
ये तीन जिसमें हो वह बड़े पुरुष को जंचता है। प्र-2,126

100. बड़े संत के पास निष्कपट होने का बहुत लाभ है। किसी को रूप नजर आ गया और वह दिल में जम गया। उसने वह सारी बात बड़े संत को खुलकर बता दी। संत ने महाराज की स्तुति करके उसका वह दुःख टाल दिया।

प्र-2,128

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	3.3.88	गुरुवार	होली, ब्रह्मस्वरूप पू. भगतजी महाराज का प्राकट्यदिन
2.	दि.	4.3.88	शुक्रवार	धूलेटी, भगवत्स्वरूप प.पू. साहेब की जन्मजयंती
3.	दि.	7.3.88	सोमवार	ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का द्वितीय स्वधामगमन दिन
4.	दि.	14.3.88	सोमवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	26.3.88	शनिवार	रामनवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
6.	दि.	29.3.88	मंगलवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032